८३ : विचार शुद्धि

२९-०६-१३, अमरकंटक

विचार शुद्धि का मतलब है- नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक आचरण कर पाना | यही विचार शुद्धि है | ऐसे विचार से मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने का प्रमाण प्रमाणित होता है | इसको भले प्रकार से जांचा है | मानव जाति एक होने का आवश्यकता इसीलिये है क्योंकि मानव अनेक जाति में बंटकर के अपराध कार्य में प्रवृत्त हो गया | अपराध कार्य का स्वरूप संघर्ष, युद्ध के रूप में ही है | उन्माद के रूप में कामोन्माद, लाभोन्माद, भोगोन्माद | यह सब बात शमन होने के लिये मानव जात एक होने का आवश्यकता आ गयी है | शमन होने का तात्पर्य न्यायपूर्वक जी पाना, धर्मपूर्वक जी पाना, सत्य सहज विधि से जी पाना | इसी के लिये मानव जात एक होना बहुत आवश्यक है | साथ-साथ मानव जात एक होने से अखण्ड समाज प्रमाणित होता है | अखण्ड समाज होना ही सार्वभौम व्यवस्था का आधार है | सार्वभौम व्यवस्था होना, धरती संतुलित होना, जंगल सुरक्षित रहना है | सार्वभौम व्यवस्था होने से चारों अवस्था संतुलित रहना होता है | इसी आधार पर इस बात पर ध्यान दिया गया | यह अनुसंधान विधि से प्राप्त हुआ |

इसे विकल्प के नाम से मानव सम्मुख रखा है | मानव जात इसे समझ पाना ही संसार सुखी रहना है | संसार सुखी रहने के लिये मानव जाति एक होना आवश्यक है | फलस्वरूप सार्वभौम व्यवस्था होना सफल होता है | इस विधि से मानव सर्वकाल में, सर्वदेश में सुखी रहना होता है | सुखी रहना ही समाधान है | समाधान=सुख, सुख=मानव धर्म, जिसमें समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व चारों भाग प्रमाणित होना होता है | इन्हीं की आवश्यकता है | इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिये अनुसंधान हुआ है | इस विकल्प में ही सभी देश काल में निहित परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना सहज हो जाता है | समाधानपूर्वक जीना ही मनुष्य का सुखी होना होता है | समस्यापूर्वक जीना दुःख होता है | इसे भले प्रकार से जांच चुके हैं | इसे हर व्यक्ति जाँच सकते हैं | इस क्रम में मानव, सुखी होने के क्रम में न्यायपूर्वक जीना होता है | न्याय आदिकाल से प्रतीक्षित है | अभी तक मानव जात को न्याय मिला नहीं | इसका कारण मानव मात्र अनेक समुदाय में बंट जाना ही है | समुदायों में बंटना, देशकाल सहित सोच विचार पर आधारित रहा |

सोच विचार में समाधान मिला नहीं, समस्या के साथ जूझता ही रहा | समस्याएं संकट से दूर होने के लिये होता है | संकट से नया संकट पैदा होता गया | आज की स्थिति में मानव इसे भली प्रकार से समझ सकता है | इसके लिये दूसरा भाग सर्वमानव शुभ चाहते हैं | शुभ के रूप में सुख ही चाहते हैं | सुखी होने के लिये एकमात्र उपाय समाधान ही है | अनेक समुदाय में बंटना ही समाधान से वंचित रहना रहा है | आज उसकी आवश्यकता आ गयी है | इसे हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है | हर व्यक्ति सुखी होना चाहते हैं, इस आधार पर इसको जाँच सकते हैं | सुखी होना समाधान से ही है | मानव का विचार शुद्ध रूप में समाधान ही है, और इसे बनाए रखना हर व्यक्ति का कर्तव्य, दायित्व होता है | व्यवस्था इस स्थिति को बनाए रखने के लिये होता है | संस्कृति, सभ्यता इसे निरंतर बनाए रखने, सुख पाने के रूप में रहता है | विचार शुद्धि के बिना कार्य शुद्धि होता ही नहीं, व्यवहार शुद्धि तो बहुत दूर रहा | इसलिये विचार शुद्धि अनिवार्य हो जाता है | इसी के लिए अध्ययन है | अध्ययन पूर्वक न्याय धर्म सत्य सहज कल्पना, स्पष्टता, स्वीकृति, समझ ही अर्थात भास् आभास प्रतीति अवधारणा ही गुणात्मक

परिवर्तन है एवं विचार शुद्धि का रास्ता है | शुद्ध विचार के साथ समाधान रूप में ही मिलता है | शुद्ध विचार ही व्यवहार और कार्य में व्यक्त होता है | इसीलिए कहा है, विचार ही व्यवहाराभ्यास है | इस ढंग से समाधान के साथ ही मानव सुखी होना होता है और कोई रास्ता ही नहीं | मानव इसे प्रयोग कर के देखा है | रूप के साथ थोड़ा सा सुख लगता है, सुख होता नहीं | इसको मानव ने अनुभव किया है | बल के आधार पर सुखी होने की बात सोचा है | इसे वीरभोग्या वसुंधरा के रूप में पहचाना है, जी के देखा है | यह भी अल्पकालीन सुख जैसा भाषा है | धन के साथ सुखी होने के लिये मानव अथक प्रयास किया है | धन शरीर काल तक ही उपयोगी होना होता है |

शरीर समाप्त होने के बाद हमारे धन को दूसरा ही उपयोग करेगा | शरीर नश्वरवादी है, जीवन शाश्वतवादी है | नश्वरवादी का ही मरणधर्मा नाम है | शाश्वतवादी का अमरधर्मा नाम है | जीवन का अमर होना विकल्पात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है | शरीर मरणधर्मा होना पहले से स्वीकृत है | हर दिन देखने को मिलता है | मानव अपने विवेक को प्रयोग कर सकता है | विवेचना करने से यही पता लगता है कि शाश्वत धर्म ही समाधान का आधार है | जीवन शाश्वत-धर्मा है, सुखपूर्वक इसे अच्छी तरह से जांचा | जीवन ही इसे अच्छी तरह से समझ सकता है | विचार, ज्ञान पर आधारित होने पर ही मानवीय है | ज्ञान, साक्षात्कार अवधारणा, बोध अनुभव सहज ही है | अनुभव पर आधारित विचार, अनुभवमूलक विचार पर आधारित व्यवहार ही सदा सदा के लिए शुद्ध रहता है | इसको अच्छी तरह से जांचने की बात बताया जा रहा है | इस प्रकार मानव सुखी होने के लिये विचार करता है, कार्य व्यवहार करता है | इसका शुद्धता का मतलब ही होता है विचार शुद्ध होना | यह अनुभवमूलक विधि से ही निरंतर होता है, निरंतर सुखी होना, आनंद होना होता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)